Universe Journal of Education & Humanities ISSN 2348-3067
Volume-4, No. II, Aug.-2017, pp.Hin.-28-30

वर्षा सम्बन्धी लोकोक्तियाँ

डॉ संगीता देवी, हिन्दी विभाग
भरथुआ, दोस्तपुर, सुलतानपुर उत्तर–प्रदेश भारत।

लोकोक्तियाँ लोक की सम्पत्ति होती हैं। नित्य के जीवन की चोखी अनुभूतियाँ जनता जनार्दन के मुख से निकल कर मौखिक ही युगों से जन मन पर छाई हुई है। वह लोकोक्तियाँ जीवन के विभिन्न पक्षों पर होती है। कृषि प्रधान देश होने के नाते अधिकतर तो कृषि सम्बन्धित तथा जो कृषि से इतर हैं वे भी अप्रत्यक्ष कृषि के ही ईद गिर्द घूमती रहती हैं। पर्याप्त लोकोक्तियाँ मानव जीवन के समान्तर चलती फिरती मिलती हैं। मौसम सम्बन्धी लोकोक्तियाँ लक्षणों का प्रतिवादन कर भविष्य के लिए सचेत करने का काम करती हैं। अनुभूतियों को एकत्र कर मनुष्य भावी जीवन को सचेत होकर जीता है। समय–समय पर पुराने लोगों के अनुभवों पर वह अपना अनुभव जोड़कर सरलता से जीवन यापन करता है।

संसार की गतिविधियाँ बहुत हैं। अनेक धन्धें जीवन यापन के लिए लोग अपनाते हैं। मिल फैक्ट्री चलती हैं। कपड़े बनते हैं। लोहे का काम फाइबर का काम, सीमेन्ट फैक्ट्री आदि में लोग कार्य करते अवश्य हैं, कोई बड़ा से बड़ा अधिकारी, अध्यापक प्रोफेसर नेता कोई भी हो लौट कर वहीं खेती के ही उत्पादों पर आश्रित हो जाते हैं। आदमी अपने विभिन्न कृत्य एवं स्वांगों पर आधारित है। दुनियाँ का भले चक्कर काट रहा है परन्तु चारा है उसी धरती के पास ही। इस पर भी एक लोकोक्ति कही गई 'केतनौ चिरई उड़ै अकाश चारा है धरती के पास'[1]। इन लोकोक्तियों का सिलसिला आदि काल से ही चला आ रहा है। अपने इन अनुभवों को पुरातन लोग छोटे–छोटे इन्द बद्ध अथवा लय बद्ध खण्डों को भविष्य के भावी लोगों के लिए छोड़ दिया है। आये दिन व समय पर लोग समसामयिक परिस्थितियों पाते हैं तो उनके मुख से स्वतः प्रस्फुटित हो जाते हैं। इनकी संख्या यो तों लाखों में हो सकती है। स्थान और परिस्थिति पर इनमें विचित्र बदलाव भी देखा जाता है। जैसे उत्तर प्रदेश में एक लोकोक्ति कही जाती है 'ऊँट के मुहें में जीरा[2]।' जहाँ ऊँट नहीं होता है यथा छत्तीसगढ़ में कहा जाता है कि 'हाथी के मुहें में सोराही[3]।'

यहाँ पर हम कुछ पूर्व लक्षणों को देखकर कहावत कहते हैं यह लक्षण वाली लोकोक्तियाँ सास्वत हैं। यथा–"सांझे धनुष सकारे मोरा[4]। यह दोनो पानी कै बौरा।" उल्टी स्थिति प्राप्त होने का प्रतिफल भी ठीक नहीं होता। यथा– 'पहिलेनि बरखा नदी उफनाय जौ जानौ कि बरख नायँ।' 'माघ में गर्मी जेठ में जाड़ा[5]। घाघ कहैं हम झेब उजाड़ा।' एक और 'दुक्ख पुरनवस भरै न ताल फेरि बरसे ई लौटि अषाढ़।" दुक्ख पुनरबस के बाद वर्षा समाप्ति पर जाती है।

एक कहावत देखे जिसमें कुछ लक्षण है यथा माघ में मौसम गर्म हो जाय, जेठ में जाड़ा पड़ने लगे,। पहिली वर्षा से ताल यदि भर जाये तो उसका परिणाम बड़ा भयंकर होता है। वर्षा बहुत कम होगी– यथा–

"माघ क अखम जेठ का जाड़। पहिनि वर्षा भरिगा ताल।
कहैं धाघ हम होब वियोगी। कुवाँ खोद के धौवैं धोबी[6]।"

जब पूरब का बादल पश्चिम तरफ जायँ तो पतली की जगह पर मोटी रोटी पकाना चाहिए अगर पश्चिम का बादल पूरब को जाय तो मोटी की जगह पर पतली बनाना चाहिए। तात्पर्य यह है कि पूरब में पश्चिम बादल जाने पर पानी बरसता है। पानी बरसने पर अन्न होगा इसलिए अधिक खाओ मोटी खाओ। पश्चिम का बादर पूरब जाय तो वर्षा के कोई क्षण नहीं। ऐसे किफायत से काम करना चाहिए यथा–

पूरब के बादर पश्चिम जायँ। पतनी बकावै मोटी खाय।
पछुवा बादर पूरब का जाय। मोटी पकावे पतली पकाय,[7]।।

यदि पूर्वी पवन बह रहा हो और उत्तर दिशा में बिजली चमकने लगे तो शुभ लक्ष्ण है। शीघ्र वर्षा के योग हैं–

'उत्तर चमकै बीजुरी पुरा बहै बाउ।
घाघ कहें सुनु धाधिनी बरघा भीतर लाउ[8]।।'

ऐसे लक्षण पर पानी बरस जाता है। इन्हे जान पहचान कर किसान भी अपनी खेती की व्यवस्था करता है। ऐसे कहा है 'एक दाई जउ चलतेउ ऊता बेडेंहि पानि पियउतेउँ पूता।' अगर दिन में गर्मी पड़े और रात में मौसम नम हो जाए तो वर्षा के लक्षण नहीं हैं।

'राति की गरमी दिन मा ओस।
घाघ कहैं बरख सौ कोस[9]।'

अगस्त तारा दक्षिण में निकल जाए और कास (एक घास) फुला जाय तो वर्षा ऋतु समाप्त हो जाती है।

Scanned by CamScanner

इसको कहीं कहीं लोहखरी (लोमड़ी) बोलने पर कहा गया है–

उए अगस्त फूले बन कासा। अब नहीं वर्षा कै आसा।

अथवा–

बोली लोहखरी फूले कास। अब नाहीं वर्षा कै आस।[10]

अगर बंगाल की तरफ अर्थात पूरब तरफ यदि इन्द्र धनुष आकाश में दिखाई पड़ जाय तो लक्षण अच्छे होतें हैं प्रातः सायं में वर्षा होने के योग पड़ रहे हैं। यथा–

'धनुष पड़ै बंगाली। मेह साझ या सकाली।।[11]

वनमुर्गी यदि उड़ कर अकाश में बोलती है तो समझना चाहिए कि वर्षा दूर है। यथा लोकोक्ति देखें।

'ढेकी बौलै जाय अकाश।
तब नाहीं बरखा कै आश।।'[12]

एक और देखे–

दिन की बछर रात निबछर।
बहै पुरवइया झब्बर झब्बर।
घाघ कहैं हम हौवे जोगी।
कुआँ खोदि के धौवें धोबी।।[13]

लक्षण ऐसा हो कि दिन में बादर हो जाते हैं रात में आसमान साफ हो जाते हैं तो समझना चाहिए घाघ के मत से अब वर्षा होना अनिश्चि है। धोबी कपड़ा धोने का काम कुएँ खोद कर करेगा। वर्षा होने की सम्भावना नहीं होगी।

एक लक्षण देखें–

'लला पियर जौ होई अकाश।
तब नाहीं वर्षा कै आशा।[14]

आकाश में यदि बादल लाल पीला दिखने लगे तब समझ लेना चाहिए कि वर्षा अब नहीं होनी चाहिए।

दक्षिणी पवन के लिए कहा गया है कि यदि सात दिन दक्षिणी पवन बहती रहे तो सातो महाद्वीप में सूखा पड़ जायेगा। लोकोक्ति देखें–

दिन सात जौ चले बाँड़ा। सूखे जल सातों खाड़ा।।[15]

जब बिजली पश्चिम उत्तर में चमकती रहे तब समझिए कि पानी जोरदार बरसेगा। पश्चिमोत्तर की चमक पानी का लक्षण देता है।

चमके पश्चिम उत्तर ओर।
तब जान्यो पानी है जोर।।[16]

फागुन महीने का अन्तिम दिन यदि मंगल पड़े तो भूकम्प आता है।

अकाल भी पड़ने के योग होते हैं। शनिवार पड़े तो अकाल का द्योतक होगा।

मंगल पड़े तो भू चलै, बुध पड़े अकाल।
जो तिथि होय सनीचरी, बिहचय पड़े अकाल।।[17]

सावन महीने में यदि शुक्र तारा नहीं दिखता अर्थात वह अस्त ही हो तो अवाल पडता है। यथा–

'सावन शुक्र न दीसै निहचै परै अकाल।'[18]

मृग शिरा नक्षत्र के तपने से बन, बालक, भैंस और ईख का खेत त्रस्त हो जाते हैं। जंगल तपने से सूखने लगता है। चारों ओर घास सूख जाती है तो गाय भैंस चरने को नही पाते, उनमें दूध की कमी हो जाती है। दूध कम होने से बाल को भी परेशानी होती है। ईख का खेत तो सूख ही जाता है यथा–

तपे मृगशिरा बिलखे चार।
बन बालक भौ मैंर उखार।।[19]

धान के पैदावार पर कहावत कही गई है। यदि दक्षिणी हवा चलेगी, तो पानी नहीं बरसेगा और नहीं होगा माइ नहीं मिलेगा। उजरी वायु चलेगी तो वर्षा होगी धान होगा कुजे भी मात खायेंगे। पुरवा वायु के चलने पर वर्षा होगी धान होगा माड़ कुरवा भर भर कर दिया जायेगा। इसलिए लोकोक्ति देखें–

वायु चलेगी दखिना। माड़ कहाँ से चखना।
वायु चलेगी उतरा। माड़ पियेगा कुतरा।[20]
वायु पियेगा कुतरा। वायु चलेगी पुरवा।
माड़ पियो भर कुरवा।[21]

जब उत्तर और पश्चिम में चमक दिखे तो समझ लेना चाहिए कि पानी का ओर आ गया अब बरसात नहीं होगी। कभी पश्चिम कभी पुरवाई तथा इधर–उधर हवा चले तब बी के योग होते हैं।

औआ कौवा बहे बतास। तब होबै बरख कै आस।।[22]

अद्रा नक्षत्र यदि आरम्भ में नहीं बरसता तथा हस्त नक्षत्र अन्त में नहीं बरसता तो किसानी खेती बारी सब चौपट हो जाती थी। कहा है–

आदि न बरसे अद्दरा, हस्त न बरसे निदान।
कहैं घाघ सुनु भड्डरी, भये किसान पिसान।।[23]

किसान पिसान हो जायेंगे अर्थात किसानी मारी जायेगी। फसल नहीं पैदा होगी।

वर्षा होने का लक्षण देखें थोड़ी देर पुरवा फिर पच्छुवाँ उधर बवण्डर भी उठने लगता है। बादल के ऊपर बादल दौड़ने लगे तो बरसात तेज होने लगती है। उक्ति देखें–

छिन पुरवैय्या छिन पछियाँव।
छिन छिन बहै बबूला बाँव।
बादर ऊपर बाद धावै। तबै घाघ पानी बरसावै।।[24]

सावन के महीने में दोचार दिन तक अगर पछुवां वायु चलने लगे तो मौसम अच्छा होने का संकेत है। वर्षा इतनी अच्छी होगी कि सभी जगह पर फसल आ सकेंगी। कहावत को देखें–

सावन का पछुवाँ दिन दुइचार।
चुल्हिउ के पाछा उपजै सार।।[25]

सावन शुक्ल पक्ष सप्तमी को यदि आकाश बादल रहित हो तो घाघ लक्षण समझा कर कहते हैं कि पृथ्वी पर खेती नष्ट हो जायेगी। इस घाघ के अनुभव

Scanned by CamScanner

को निम्नालिखित उक्ति के रूप में प्रस्तुत किया जा सकता है यथा–

सावन शुक्ला सतमी गमन स्वक्ष जौ होय।
घाघ कहैं सुनु बाघिनी पुहुमी खेती होय$_{26}$।

अगर रोहिणी में वर्षा हो जाय मृगसिरा तप कर अद्रा में भी प्रवेश कर, जाय तो घाघ कहते हैं कि इतना पैदावार होगा कि कुत्ते भी भाव नहीं पूछेंगे। इस अनुभव को नीचे लिखे ढंग से घाघ ने प्रस्तुत किया है।

रोहिनि बरसै मृग तपे, कुछु कुछु अद्रा जाय।
कहैं घाघा घाघिनी से, स्वान मात नहिं खाय$_{27}$।।

घाघ का अपना विचार देखें। पुरवइया और बछियाव एक दूसरे से घुलमिल कर बहती है और कोई स्त्री किसी पुरूष से हंसकर बात करती है। बादल प्रचुर वर्षा करेंगे और वह स्त्री दूसरा भर्तार करेगी। घाघ लक्षण को देखकर सगुन का विचार कर देते हैं। लोकोक्ति देखें–

पूरब में जौ पछुवा बहैं, हँसि के नारि पुरूष से कहै।
ऊ बरसैई करै भतार, घाघ कहैं यह सगुन विचार$_{28}$।।

घाघ का अपना अनुभव है कि यदि सावन के महीने में पुरवइया बहने लगे
वर्षा नहीं होगा अकाल पड़ जायेगा। बैल बेंच कर धेनु गाय खरीद लो धेनु गाय दूध देगी उसे अकाल कट जायेगा। यथा–

सावन माह बहे पुरवाई। बरदा बेंचि लिहा घेनुगाई$_{29}$।।

जब दिशा–दिशा की वायु आपस में हिल मिल कर बहने लगती है तो घाघ का अनुभव है कि इतना पानी बरसेगा कि कहीं पर अभायगा नहीं। उनकी उक्ति देखे–यथा–

वायु में जब वायु अमाय।घाघ कहै जब कहाँ समाय।।
पूरब धनुहीं पश्चिम मान$_{30}$।घाघ कहैं बरखा नियरान।।

घाघ के जीवन का अनुभव आज भी लोग याद रखते हैं। समय समय पर उससे लाभ लेते हैं। उनका समग्र अनुभव बड़ा व्यापक था। उस व्यापक अनुभव को बहुत दिनों लोग भुनाते चले आ रहे हैं। आज भी लोग उनकी कहावत को कह स्मरण कर लोग खेती का काम कर लिया करते हैं।

गांवों में जहाँ खेती का कार्य निर्वाध चला आ रहा है लोग घाघ को कैसे भूल जायेंगे। कहावतें कदम–कदम पर किसानों का मार्ग दर्शन करती हैं। देश में प्रचलित कहावते ही हमारे समाज का वास्तविक स्वरूप हैं। इन कहावतों की एक विशेषता यह है कि कुछ दूरी के अन्तर पर उनके रूप में परिवर्तन हो जाता है। हर कोई उन्हें अपने अनुसार रूपान्तरित कर लेता है। मैनें लोकोक्तियों का जो संकल 20 वर्ष का समय देकर सामान्य ढंग से किया है उसमें अनेक लोकोक्तियाँ थोड़े भाषान्तर पर स्थान के विभेद के अनुसार प्राप्त हुई हैं। उनको मैने ज्यादातर अपने यहाँ की भाषा में कर लिया है।

लोकोक्तियों के विभिन्न स्तम्भों पर मैनें अनके आलेख तैयार किया। उसी क्रम में घाघ की लोकोक्तियों में स्वास्थ्य सम्बन्धी, खेती सम्बन्धी, बैल के लक्षण, ज्योतिष से सम्बन्धी, इत्यादि पर ललित निबन्ध लिखने का क्रम मैने चला रखा है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. घाघ, घाघ की लोकोक्तियां राम नरेश त्रिपाठी
2. घाघ, घाघ की लोकोक्तियां राम नरेश त्रिपाठी
3. घाघ, घाघ की लोकोक्तियां राम नरेश त्रिपाठी
4. घाघ, घाघ की लोकोक्तियां राम नरेश त्रिपाठी
5. घाघ, घाघ की लोकोक्तियां राम नरेश त्रिपाठी
6. घाघ, घाघ की लोकोक्तियां राम नरेश त्रिपाठी
7. घाघ, घाघ की लोकोक्तियां राम नरेश त्रिपाठी
8. घाघ, घाघ की लोकोक्तियां राम नरेश त्रिपाठी
9. घाघ, घाघ की लोकोक्तियां राम नरेश त्रिपाठी
10. वृंहद लोकोक्तियाँ डॉ0 आद्या प्रसाद सिंह (प्रदीप)
11. वृंहद लोकोक्तियाँ डॉ0 आद्या प्रसाद सिंह (प्रदीप)
12. वृंहद लोकोक्तियाँ डॉ0 आद्या प्रसाद सिंह (प्रदीप)
13. घाघ, घाघ की लोकोक्तियां राम नरेश त्रिपाठी
14. घाघ, घाघ की लोकोक्तियां राम नरेश त्रिपाठी
15. घाघ, घाघ की लोकोक्तियां राम नरेश त्रिपाठी
16. वृंहद लोकोक्तियाँ डॉ0 आद्या प्रसाद सिंह (प्रदीप)
17. वृंहद लोकोक्तियाँ डॉ0 आद्या प्रसाद सिंह (प्रदीप)
18. वृंहद लोकोक्तियाँ डॉ0 आद्या प्रसाद सिंह (प्रदीप)
19 वृंहद लोकोक्तियाँ डॉ0 आद्या प्रसाद सिंह (प्रदीप)
20 वृंहद लोकोक्तियाँ डॉ0 आद्या प्रसाद सिंह (प्रदीप)
21. वृंहद लोकोक्तियाँ डॉ0 आद्या प्रसाद सिंह (प्रदीप)
22. घाघ, घाघ की लोकोक्तियां राम नरेश त्रिपाठी
23. घाघ, घाघ की लोकोक्तियां राम नरेश त्रिपाठी
24. घाघ, घाघ की लोकोक्तियां राम नरेश त्रिपाठी
25. घाघ, घाघ की लोकोक्तियां राम नरेश त्रिपाठी
26. घाघ, घाघ की लोकोक्तियां राम नरेश त्रिपाठी
27. घाघ, घाघ की लोकोक्तियां राम नरेश त्रिपाठी
28. घाघ, घाघ की लोकोक्तियां राम नरेश त्रिपाठी
29. घाघ, घाघ की लोकोक्तियां राम नरेश त्रिपाठी
30. घाघ, घाघ की लोकोक्तियां राम नरेश त्रिपाठी

Scanned by CamScanner